**ओ३म्**

**‘संसार में केवल वेद ही ईश्वरकृत हैं अन्य कोई ग्रन्थ नहीं’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वेद ही ईश्वरकृत ज्ञान है और चार मन्त्र संहितायें ही उस ज्ञान के पुस्तक रूप ग्रन्थ हैं। वेद ईश्वर कृत ही हैं अन्यकृत नहीं है, इसमें क्या प्रमाण है? इसका उत्तर यह है कि ईश्वर कृत ग्रन्थ में जो विशेषतायें होनी चाहियें वह केवल वेदों में ही हैं। वह विशेषतायें ही प्रमाण हैं जो कि निम्नलिखित हैं-

(क) जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, शुद्ध गुण, कर्म, स्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुणवाला है, वैसा जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकल कथन हो, वह ईश्वर कृत होता है, अन्य नही। ऐसे केवल वेद हैं, अन्य नहीं।

(ख) जिसमें सृष्टिक्रम प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरुद्ध कथन न हो, वह ईश्वरोक्त है। यह शर्त भी वेदों पर ही लागू होती है अर्थात् वेद इस शर्त को भी पूरा करते हैं। अन्य ग्रन्थों की शिक्षायें इस शर्त को पूरा नहीं करती हैं।

(ग) जैसा ईश्वर का निभ्र्रम ज्ञान है वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्ति-रहित ज्ञान का प्रतिपादन है, वह ईश्वरोक्त है। वेद इस शर्त को भी पूरा करते हैं।

(घ) जैसा परमेश्वर है और जो सृष्टिक्रम रक्खा है, वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे, वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है। और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण विषयों में अविरुद्ध, शुद्धात्मा के स्वभाव से विरुद्ध न हो, इस प्रकार के वेद हैं, अन्य बाईबल आदि ग्रन्थ नहीं हैं।

(ड.) ईश्वर का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में अमैथुनी सृष्टि के वा प्रथम पीढ़ी के मनुष्यों को दिया जाना चाहिये। वेद इस कसौटी को भी पूरा करते हैं। यदि ईश्वर सृष्टि उत्पत्ति के हजारों वर्षों बाद ज्ञान देता है तो जो मनुष्य पहले हो चुके हैं, वह उस ज्ञान से वंचित रहने के कारण ईश्वर पर इसका दोष लगता है। अतः सृष्टि की रचना व मनुष्योत्पत्ति के हजारों वर्षों बाद जो धार्मिक पुस्तकें बनीं है, वह ईश्वरीय नहीं मानी जा सकती।

प्रश्न--वेद को ईश्वर से होने की क्या आवश्यकता है? क्रमशः ज्ञान-वृद्धि होते-होते मनुष्य वेद-पुस्तक भी बना लेते।

उत्तर--शिक्षा के बिना पुस्तक नहीं बना सकते क्योंकि बिना कारण के कार्योत्पत्ति का होना असम्भव है। जंगली मनुष्य जैसे सृष्टि को देखकर भी विद्वान् नहीं होते और शिक्षा देने से विद्वान हो जाते हैं। यदि परमात्मा आदि सृष्टि में ऋषियों को वेद की विद्या न देता और वे ऋषि दूसरों को न पढ़ाते तो कोई भी विद्वान् नहीं हो सकता था। जैसे किसी बालक को पैदा होते ही एकान्त जंगल में या अविद्वानों वा पशुओं के संग में रख देवे तो वह कभी भी विद्वान् नहीं हो सकता। इसलिए -

**स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।। योग दर्शन।।**

उस परमात्मा को शास्त्रों में पूर्वज ऋषियों का भी गुरु कहा है।

 इन सब कारणों से वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है। हम आशा करते हैं कि पाठक इन तर्कों से अवश्य सहमत होंगे।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**

**ओ३म्**

**‘वैदिक पथ के अगस्त और जुलाई 2016 के अंक’**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

वैदिक पथ श्री घूड़मल प्रह्लादकुमार आर्य धर्मार्थ न्यास, हिण्डोन सिटी की मासिक पत्रिका है। न्यास पत्रिका के साथ आर्य साहित्य का प्रकाशन भी करता है और यह देश में आर्य साहित्य के प्रकाशन के क्षेत्र में प्रसिद्ध भी है। हम सन् 1997 से कुछ वर्ष पूर्व न्यास के सम्पर्क में आये हैं। सन् 1997 में न्यास द्वारा आयोजित पं. लेखराम बलिदान शताब्दी आयोजन के उत्सव में भी हम प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी की प्रेरणा से अपने मित्र श्री राजेन्द्र कुमार अधिवक्ता, श्री रामेश्वर प्रसाद आर्य और श्री दौलत सिंह राणा जी के साथ सम्मिलित हुए थे। वहां आमंत्रित विद्वानों स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी सम्पूर्णानन्द सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, कैप्टेन देवरत्न आर्य, श्री अरुण अबरोल, भजनोपदेशक श्री सत्यपाल सरल एवं श्री नरेश दत्त आर्य आदि के दर्शन करने के साथ इनके उपदेशों व भजनों को सुना था। इसी अवसर पर वहां एक निकटवर्ती जैन तीर्थ व उसके भव्य व विशाल मन्दिर को भी देखा था। न्यास द्वारा अतिथियों का भोजन आदि से जो सत्कार किया गया था वह हमें व हमारे सभी जीवित साथियों को आज तक स्मरण है। यह स्थिति अन्यत्र दोबारा नहीं आई।

 वैदिक पथ का अगस्त, 2016 का अंक एक विशेषांक है जिसका शीर्षक है **‘‘मनु और मनुवाद परीक्षा विशेषांक”** यह विशेषांक पत्रिका के आठवें वर्ष का 12 वां अंक है। विशेषांक में कुल 144 पृष्ठ हैं तथा मुख पृष्ठ पर पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय और पं. भगवदत्त जी के रंगीन आकर्षक चित्र भी हैं। पत्रिका के प्रधान सम्पादक आर्यजगत के ख्याति प्राप्त विद्वान डा. ज्वलन्तकुमार शास्त्री, अमेठी हैं। आरम्भ में 5 पृष्ठीय सम्पादकीय है जिसका शीर्षक है **‘मनु और मुनवाद की परीक्षा विशेषांक’।** सम्पादकीय में मई 2009 से जून, 2016 तक प्रकाशित किये गये 9 विशेषांकों का उल्लेख व उनका संक्षिप्त विवरण भी किया गया है। पत्रिका के सम्पादक श्री प्रभाकरदेव आर्य जी ने इस विशेषांक में **‘वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मनु की प्रासंगिकता’** पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किये हैं। चार पृष्ठ राष्ट्रीय समाचारों को भेंट किये गये हैं जिसमें न्यास द्वारा प्रकाशित कुरआन-परिचय ग्रन्थ (तीन खण्डों में) का विज्ञापन भी है। विशेषांक का मुख्य लेख **‘‘मनुस्मृति: एक अध्ययन”** विषयक पं. गंगाप्रसाद उपाधाय जी का है जो 78 पृष्ठों का है। यह लेख अपने आप में एक लघु ग्रन्थ है। यह बताना अनुचित न होगा कि पं. गगाप्रसाद उपाध्याय जी आर्यजगत के चोटी के विद्वान थे। उन्होंने अनेक विषयों पर प्रमाणिक ग्रन्थ लिखे हैं। उनके लेखों व लघु पुस्तकों को **‘गंगा ज्ञान सागर’** के चार भागों में प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने कुछ वर्ष पूर्व प्रस्तुत किया है। उपाध्याय जी संस्कृत, हिन्दी, अंगेजी व उर्दू के विद्वान थे। आपका समस्त साहित्य सरल व सुबोध भाषा में लिखा गया है जिसे पढ़कर विषय को आसानी से समझा जा सकता है। यही कारण है कि हमने उनके आस्तिकवाद, जीवात्मा, कर्म-फल सिद्धान्त आदि अनेक ग्रन्थों व लेखों को पढ़ा है। कल ही हमने गंगा ज्ञान सागर से उनके तीन लेखों को भी पढ़ा है जो हमें उपन्यास की तरह रोचक लगते हैं और विषय को ऐसा समझाते हैं कि उसे पढ़ने के बाद विषय का प्रभूत ज्ञान पाठकों को होता है।

 पं. गंगा प्रसादउपाध्याय जी के बाद प्राच्यविद्याविद् पं. भगवद्दत्त जी का **‘‘मनुष्यमात्र का परममित्र स्वायंभुव मनु”** विषयक लेख है जो बहुत पहले एक लघु ग्रन्थ के रूप में प्रकाशित हुआ था। यह लेख पत्रिका में 29 पृष्ठों में पूरा हुआ है। इसके बाद परिशिष्ट-1 (क) के अन्तर्गत पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी पर डा. भवानीलाल भारतीय जी का 17 पृष्ठीय लेख है। इसके बाद परिशिष्ट-1 (ख) के अन्तर्गत पं. भगवद्दत्त जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर डा. आचार्य विजयपाल विद्यावारिधि का एक लेख है। अन्तिम लेख व समाचार **‘वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी का 102 वां जयन्ती महोत्सव समारोह सम्पन्न’** शीर्षक से है जिसे आचार्य जी के सुयोग्य पौत्र श्री स्वस्ति अग्रवाल जी ने लिखा है। इस प्रकार यह पूरी पत्रिका सम्प्रति दुर्लभ एवं ज्ञानवर्धक सामग्री से परिपूर्ण है जिसे पाठकों को पढ़ना चाहिये।

 आज ही हमें न्यास से प्रेषित आठ पुस्तकों के साथ वैदिक-पथ पत्रिका का जुलाई, 2016 माह का 56 पृष्ठीय भव्य अंक भी मिला है। इस अंक में अनेक उपयोगी लेख सम्मलित हैं। आरम्भ में डा. ज्वलन्त कुमार शास्त्री जी लिखित सम्पादकीय है जिसका शीर्षक है **‘श्री अरविन्द केजरीवाल का बड़बोलापन’।** इसके बाद श्री प्रभाकरदेव जी का पाठकों के नाम सन्देश व निवेदन है जिसका शीर्षक है **‘विपरीत परिस्थितियों में आपका साथ’।** लेखों में अपौरुषेय वाणी-वेद (स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती), दरिद्रनारायण या समृद्धिनारायण (डा. महीप सिंह), **‘अथ सृष्टि-उत्पत्तिं व्याख्यास्यामः’** की माप-तौल (आचार्य लोकेश दार्शनेय), शिक्षा के सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द की अवधारणा (डा. प्रमा शास्त्री), हम लज्जित नहीं भयभीत हैं (तसलीमा नसरीन), पं. चन्द्र शेखर आजाद (आर्यमुनि वानप्रस्थ)। अन्तिम लेख डा. मंजुलता गुप्ता का वेदों में वन और उसकी सुरक्षा विषय पर है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में न्यास के अनेक प्रकाशनों के विज्ञापन वा जानकारी है। पाठकों को यह भी बता दें कि पत्रिका का पंच वार्षिक शुल्क आठ सौ रुपये और आजीवन शुल्क 2100 रुपये है। पत्रिका की प्राप्ति के लिए श्री प्रभाकरदेव आर्य जी से मोबाइल फोन संख्या 09414034072 / 09887452959 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

 पाठकों की जानकारी के लिए हमने यह आलेख तैयार किया है। आशा है कि कुछ को यह उपयोगी लगे।

 **-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**